1

पर्यटन का विकास

विश्व में पर्यटन के विकास को वर्तमान स्तर तक पहुँचने में हजारों वर्ष लगे हैं। यह मनुष्य के अपने पर्यावरण एवं परिवेश के साथ विभिन्न प्रकार की पारस्परिक क्रियाओं का परिणाम रहा है और इसका विभिन्न स्तरों पर विकास हुआ है। इस पाठ में विभिन्न कालों में पर्यटन के विकास पर विचार करने का प्रयास किया गया है। प्राचीन काल से शिक्षा एवं धर्म को पर्यटन की वृद्धि के घटकों के तौर पर देखा जाता रहा है। पर्यटन को व्यापार एवं वाणिज्य की बढ़ती जरूरत से भी प्रोत्साहन मिला है। इसलिए हमने अतीत में सिल्क एवं गरम मसाले के व्यापार की बातें सुनी हैं और वर्तमान में भी वे हमारा ध्यानाकर्षित कर रही हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- भारत में पर्यटन के ऐतिहासिक परिदृश्य की व्याख्या कर सकेंगे;
- अनेक पूर्ववर्ती घटनाओं की पहचान कर सकेंगे जिनके कारण व्यापार पर्यटन को बढ़ावा मिला। उदाहरण के लिए सिल्क रूट, गरम मसाले मार्ग एवं समुद्री यात्राएँ;
- प्राचीन काल से नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, देवबंद में शैक्षिक पर्यटन की चर्चा कर सकेंगे तथा
- अनेक प्रकार की धार्मिक और तीर्थयात्रा पर्यटन पर चर्चा कर सकेंगे।

1.1 भारत में पर्यटन का ऐतिहासिक परिदृश्य

पर्यटन के विकास को ऐतिहासिक परिदृश्य के माध्यम से देखा जा सकता है। इसमें प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक अनेक परिवर्तन पाए जाते हैं।

1.1.1 प्रारम्भिक काल में पर्यटन

प्रारंभिक काल से ही लोग भोजन, व्यापार, धार्मिक उद्देश्यों एवं शिक्षा हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते रहे हैं पर ये यात्राएँ अनेक कारणों से नजदीक के स्थानों तक सीमित रहीं। तब

सड़कें कम थीं, भोजन उपलब्ध नहीं था। सड़कें असुरक्षित थीं और यहाँ तक कि स्थानों के साथ-साथ मार्गों की जानकारी भी नहीं थी। कभी-कभी शाही सौजन्य मिलने से यात्रा करना आसान हो जाता था। ऐसी यात्रा का एक अच्छा उदाहरण मौर्यकाल के 262 बीसी. में देखा जा सकता है। राजा अशोक से राजकीय सहयोग मिलने पर व्यक्ति दूरवर्ती स्थानों जैसे पाटलीपुत्र (पटना), लुंबिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ और गया की यात्रा कर सके। इन सभी स्थानों पर स्मारक एवं विश्राम-गृह बनाए गए थे जिनमें यात्री आराम कर सकते थे। हर्षवर्धन भी बौद्ध धर्मानुयायी था। उन्होंने यात्रियों हेतु अनेक धर्मशालाएँ बनवाई और यात्रियों के लिए अनेक मठ भी निर्मित किए गए। यह दर्शाता है कि यात्रा सुविधाओं में कैसे सुधार किए गए और यात्रा करना आसान हो गया।

भारत में यात्रा करने वाला पहला विदेशी समूह शायद फ़ारसी था। फ़ारस से भारत की यात्रा करने वाले काफिलों के अनेक प्रमाण हैं। अनेक यात्रियों ने यूनान से फ़ारस अथवा मैसोपोटामिया के रास्ते भारत में प्रवेश किया। यूनान में वर्णन मिलता है कि भारत में रथों के लिए अच्छे मार्ग थे और घोड़े, हाथी एवं ऊँट यातायात के सामान्य साधन थे। फ़ारस और भारत के बीच व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का वर्णन भी मिलता है। 633 ईस्वी में एक चीनी बौद्ध ह्यूनसांग भारत आया था और उसे अपनी यात्रा कठिन एवं खतरनाक लगी। उसका उद्देश्य प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों को एकत्र करना एवं उनका अनुवाद करना था।

भीतरी प्रदेशों से लाए गए सामान शहरों और बाजारों में पहुँचते थे। यात्रियों को रात्रिकालीन ठहरने के स्थानों में ठहराया जाता था। उन्हें सराय के नाम से जाना जाता था और शहर के द्वार के पास निर्मित सरायों में यात्रियों को सभी सेवाएँ दी जाती थीं। मनोरंजन एवं नाच गाने के बड़े कमरे होते थे। जुआ खेलने का लाइसेंस दिया जाता था जो राज्य के लिए आय का जरिया होता था। मुगलों के शासन काल में शासकों ने बहुत अधिक यात्राएँ कीं और सड़कों एवं अन्य सुविधाओं के विकास पर ज़ोर दिया। आज भी हमें मील के पत्थरों, सरायों और सड़कों के जाल के अवशेष मिलते हैं जो इस विशाल देश के सभी मार्गों को सुगम बनाते हैं।

1.1.2 औपनिवेशिक काल में पर्यटन

वर्ष 1498 में वास्को-डी-गामा केरल के पश्चिमी घाट पर कालीकट पहुँचा और भारत व यूरोप के बीच व्यापार व वाणिज्य का रास्ता तैयार किया। इसके बाद डच और ब्रिटिश भी पहुँचे। भारतीय शासकों के मध्य आंतरिक कलह के कारण विदेशी व्यापारियों को धीरे-धीरे अपने राजनीतिक प्रभाव को स्थापित करने के अवसर प्राप्त हुए। इनमें से ब्रिटिश सफल सिद्ध हुए और उन्होंने धीरे-धीरे भारतीय शासकों से शक्तियों को हथिया लिया। समय के साथ उनका प्रभाव बढ़ा और उन्होंने सम्पूर्ण देश पर कब्जा कर लिया। तब उन्होंने भारत में रेलवे का जाल बिछाया जो एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा करने का सबसे बड़ा साधन बन गया।

1.1.3 आधुनिक काल में पर्यटन

भारतीय रेल घरेलू यात्रियों के लिए यातायात के क्षेत्र में सबसे बड़ी सुविधा रही है। पहली रेल वर्ष 1853 में वाणिज्य के उद्देश्य से बंबई (मुंबई) से थाणे के बीच प्रारम्भ हुई थी। भारत में

रेलों के विस्तार ने आरामदायक यात्रा की संभावना को बढ़ाया। देश में हवाई यात्रा शुरू होने से शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या भी बढ़ी। पहली हवाई यात्रा 18 फरवरी 1911 में प्रारम्भ हुई। इसे इलाहाबाद से 10 मिलोमीटर दूर नैनी जंक्शन तक शुरू किया गया। लेकिन वास्तविक शुरुआत 15 अक्तूबर 1932 से हुई। इस दिन जेआरडी टाटा ने एकल इंजन के हवाई जहाज से करांची से मुंबई (तब बम्बई) तक की उड़ान भरी। उन्हें भारत में नागरिक विमानन का जनक माना जाता है और वे एयर इंडिया के संस्थापक थे। ये दोनों काल परिवहन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। सड़कें व जलयान प्राचीन समय से परिचालन में थे। परिवहन प्रणाली के सभी स्वरूपों ने पर्यटन उद्योग को अधिकतम सहयोग दिया।

1.1.4 स्वतंत्रता के पश्चात पर्यटन

भारत में अनेक प्रकार की भौतिक एवं जलवायु के कारण पर्यटक स्थलों की एक लम्बी सूची है। भारत सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिकता, सुंदर दृश्यों, इतिहास एवं अन्य अनेक दृष्टियों से विविधता में एकता वाला देश है। आज भारत ने देश में पर्यटन की वृद्धि व विकास के लिए बहुत बड़ा ढाँचा खड़ा किया है।

स्वतंत्र भारत में परिवहन सुविधाओं में सुधार से पर्यटन उद्योग को बहुत बढ़ावा मिला है। होटल एवं आतिथ्य सुविधाओं ने पर्यटकों को बहुत आराम दिया है। चार महानगरों, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई एवं मुंबई को जोड़ने वाली स्वर्णिम चतुर्भुजीय सड़कों से पर्यटन में और वृद्धि होगी। उत्तरी-दक्षिण कोरिडोर उत्तर में श्रीनगर से दक्षिण में कन्याकुमारी को जबकि पश्चिम-पूर्व कोरिडोर पश्चिम में पोरबंदर एवं पूर्व में सिलचर को जोड़ते हैं। स्वर्णिम त्रिकोणीय कोरिडोर उत्तर के तीन शहरों – दिल्ली, आगरा व जयुपर को जोड़ता है। यह त्रिकोणीय मार्ग अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के साथ-साथ देशी पर्यटकों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह स्वर्णिम चतुर्भुजीय कोरिडोर देश के पूर्वी भाग के पुरी, कोणार्क व भुवनेश्वर को जोड़ता है। भारत में पर्यटन को चिकित्सा क्षेत्र से भी जबरदस्त उछाल मिला है क्योंकि बहुत बड़ी संख्या में लोग भारत में बेहतर एवं कम कीमत की चिकित्सा सुविधा पाने के लिए आते हैं। यह हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति, जैसे आयुर्वेद एवं पंचतत्व पद्धति की चिकित्सा के कारण भी है जिससे बहुत से पर्यटक भारत की ओर आकर्षित होते हैं।

अब आप समझ सकते हैं कि देश में किस प्रकार पर्यटन का विकास हुआ है। स्वतंत्रता के बाद पर्यटन पर विशेष ज़ोर बढ़ा दिया गया। यह अनेक कारणों से हुआ जिनके बारे में आप आगे पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. अतीत के शैक्षिक संस्थानों ने किस प्रकार पर्यटन को बढ़ाने में सहयोग दिया?
2. पर्यटन को बढ़ाने में समुद्री यात्रा की क्या भूमिका है?
3. हाल ही के वर्षों में पर्यटन को प्रभावित करने वाले कौन-से कारक हैं?

टिप्पणियाँ

1.2 मानव जीवन शैली में विकासोन्मुख परिवर्तन

प्रारंभ में मनुष्य खानाबदोश थे और वे भोजन एवं जीविका की खोज में घूमते थे। वे आनन्द की अपेक्षा भोजन पाने में अधिक रुचि रखते थे। उनकी यात्राएँ केवल पदयात्रा तक ही सीमित थीं।

कृषि-कार्य एवं पशुपालन से मानव का एक स्थान पर बसना प्रारम्भ हुआ। उस समय लोगों को कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में जीवित रहना पड़ता था। उनका निवास ऐसे इलाकों तक सीमित रहता था जहाँ जीवन कुछ आसान हो और वह स्थान नदी के किनारे हो। ये वही इलाके थे जहाँ सभ्यता का विकास हुआ। सभ्यता के विकास एवं विभिन्न अतिशेष मदों के उत्पादन में वृद्धि से नजदीकी बस्तियों के साथ व्यापार प्रारम्भ हुआ। शायद यह पर्यटन की शुरुआत थी। यद्यपि व्यक्तियों की यात्रा का उद्देश्य केवल व्यापार से संबंधित था। लेकिन इसे नोट करना चाहिए कि पर्यटन की वर्तमान परिभाषा उस समय लागू नहीं होती थी एवं यह कहना कठिन है कि आधुनिक पर्यटन की शुरुआत कब हुई। जैसे-जैसे अफ्रीका, एशिया और मध्य-पूर्व के साम्राज्य बढ़ते गए, यात्रा व पर्यटन के लिए जरूरी अवस्थापनाएँ, जैसे सड़कें एवं जलीय मार्ग निर्मित किए गए। लम्बी दूरी की यात्रा के लिए ऊँट, घोड़े व नावों इत्यादि का उपयोग किया जाता था। मिस्र की सभ्यता के दौरान व्यापार एवं आनंद दोनों हेतु यात्राएँ प्रारम्भ हो गई थीं। प्रमुख मार्गों और शहरों में यात्रियों के ठहराने की व्यवस्था की गई, आस्ट्रियन साम्राज्य में यात्रा के साधनों में वृद्धि हुई और सड़कों को बेहतर बनाया गया। उसके बाद फ़ारसियों ने सड़कों में और सुधार किए जिससे परिवहन के लिए चार पहिए वाले वाहन बने। ऐसा विश्वास किया जाता है कि 776 ईसा पूर्व की गर्मियों में यूनान में आयोजित पहले ओलंपियाड में लोगों की संगठित रूप में पहली यात्रा थी।

रोमन साम्राज्य में शासक वर्ग ने अपने खेलकूद एवं धार्मिक आयोजन किए तथा शहरों की यात्रा की। धनवान रोमनों में सैर-सपाटा भी प्रचलित था और अधिकांश ने यूरोप की यात्रा की। रोम वासी स्फिंक्स एवं पिरामिडों को देखने हेतु मिस्र गए। सिकन्दरिया एक वैश्विक शहर था क्योंकि वहाँ बहुत से राष्ट्रीयता के लोग जैसे मिस्र, ग्रीक, यहूदी, भारतीय एवं सीरिया के लोग रहते थे। इसके अतिरिक्त रोमवासियों ने स्पा थेरेपी को विकसित किया जिसे उन्होंने पूरे संसार को प्रस्तुत किया। 17वीं शताब्दी तक स्पा थेरेपी के साथ विश्राम, मनोरंजन एवं स्वस्थ सामाजिक गतिविधियों को जोड़ा गया। यद्यपि, स्पा थेरेपी, पर्यटन का एक स्वरूप है पर उसके साथ आज के हॉलिडे पर्यटन का कोई मेल नहीं है। थॉमस कुक ने अपने 500 स्थानीय लोगों के साथ लाइचेस्टर, लंदन रोड से लॉगबॉरोग तक का एक टूर 5 जुलाई 1841 को आयोजित किया था तब से थॉमस कुक को प्रथम ऑपरेटर माना जाता है।

1.3 आधुनिक पर्यटन की पूर्ववर्ती घटनाएँ

यह जानना बहुत रोचक होगा कि पर्यटन वास्तव में कैसे प्रारम्भ हुआ? प्रारम्भिक दिनों में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान में भोजन की खोज में जाते थे जो या तो पशुओं अथवा जंगली बेर का क्षेत्र होता था। मानव ने जब खेती-बाड़ी के बारे में जाना तब उसने बसना शुरू किया लेकिन जब भूमि का पूरा दोहन कर लिया तो वे पुनः आगे को चलने लगा। कांस्य युग के दौरान शहर निर्मित किए गए जिसने ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में लोगों के प्रवास को प्रोत्साहित किया। वे यहाँ शिल्पी, दस्तकार अथवा अन्य प्रकार के व्यापार की खोज में आए। इसका ज्ञान एक सभ्यता के सिक्कों और मुद्राओं का अन्य सभ्यता के क्षेत्र में मिलने से होता है। ऐसा एक उदाहरण सिंधु घाटी है। जब हम कांस्य-युग से लौह-युग सभ्यता में आते हैं तो यात्राएँ खूब होने लगी थीं तथापि

हम यह जानेंगे कि प्राचीन काल से यात्राएँ एवं पर्यटन वास्तव में कैसे विकसित हुए? यदि हम मानव की यात्राओं की खोज करते हैं तो हम खानाबदोश अवधि से प्रारम्भ कर सकते हैं। यह क्रम इस तरह से हो सकता है –

(क) खानाबदोशी
(ख) तीर्थयात्रा
(ग) व्यापार एवं कारोबार हेतु यात्रा
(घ) प्रव्रजन
(ङ) अनुसंधान एवं शिक्षा हेतु यात्रा
(च) बहुलक्षीय पर्यटन

टिप्पणियाँ

1.3.1 खानाबदोशी

खानाबदोश वे व्यक्ति थे जो भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे। आज भी आप देख सकते हैं कि बहुत से व्यक्ति कारवाँ बना कर अपने बच्चों व साज-समान के साथ चलते हैं। हमने पढ़ा है कि व्यक्तियों का यह संचालन जीवित रहने से जुड़ा था। आजकल ये लोग रेगिस्तान व पहाड़ों में ही बचे हैं जहाँ भोजन उपलब्ध नहीं है।

1.3.2 तीर्थयात्रा

तीर्थयात्रा अपने विश्वास व आस्था के पवित्र स्थानों की यात्रा है। अनेक धर्म कुछ स्थानों के साथ बहुत महत्व जोड़ देते हैं जैसे आत्मिक जागृति के संस्थापकों को जन्म अथवा मृत्यु के साथ जोड़ना। विश्वास करने वालों लोगों के बीच इन स्थानों का बहुत महत्व है। आधुनिक समय में तीर्थयात्रा एक सामूहिक पर्यटन का स्रोत बन गई है और परिवहन तथा अन्य सुविधाओं के विकास के साथ ही ऐसे स्थानों पर लोगों का भ्रमण करना भी बढ़ गया है।

1.3.3 व्यापार व कारोबार के लिए यात्रा

जैसे ही व्यापार मार्ग बढ़े, नए स्थानों का ज्ञान हुआ। लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना प्रारम्भ हो गया। शीघ्र ही व्यापार बढ़ा और औद्योगिक क्रान्ति के कारण वस्तुओं का विनिमय बढ़ा। वास्को-डी-गामा व कोलंबस द्वारा खोजे गए जल-मार्ग से नए स्थानों की खोज हुई तथा जहाज निर्माण ने बड़ी भूमिका निभाई और इसी तरह निर्मित मालों के विक्रय एवं कच्चे माल की खरीद की माँग भी बढ़ी। इसी से अपने धर्म का प्रचार-प्रसार के साथ-साथ व्यापार उद्देश्यों के लिए भी यात्राएँ हुई। शीघ्र ही इसने आधुनिक पर्यटन का स्वरूप प्राप्त किया।

1.3.4 प्रव्रजन

पश्चिम में औद्योगिक क्रांति के उदय से संपूर्ण संसार में निर्मित मालों के क्रय-विक्रय हेतु बाज़ार की खोज प्रारंभ हुई। प्रव्रजन लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना है। यह बहुत लंबे समय से चल रहा है। प्रारंभिक प्रव्रजन लगभग लाखों वर्षों पहले प्रारंभ हुआ होगा जब होमोरेक्ट्स का अफ्रीका से यूरोप और एशियाई क्षेत्र में प्रव्रजन हुआ था।

टिप्पणियाँ

1.3.5 अनुसंधान एवं शिक्षा हेतु यात्राएँ

समय के साथ-साथ लोगों की यात्राएँ किसी विशिष्ट कार्य हेतु होने लगीं। तब लोग दूर-दराज़ के स्थानों में अच्छी शिक्षा की खोज में जाने लगे। इसने शैक्षिक पर्यटन को अत्यधिक विस्तार दिया। दूर-दराज़ के इलाकों में अनुसंधान हेतु असंख्य स्कूल व शैक्षिक संस्थान खुल गए। आज भारत में हम बिहार के बहुत प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना देख रहे हैं।

1.3.6 बहुलक्षीय पर्यटन

आज पर्यटन ने अनेक कारणों से विविध स्वरूप पा लिए हैं। यह बहुत से देशों में आर्थिक कार्यकलापों की प्रगति के लिए एक प्रभावकारी व लाभकारी साधन है। पर्यटकों की जरूरत के अनुसार सभी सुविधाएँ देने का ध्यान रखा जाता है, जिनमें परिवहन, आवास पर्यटकों की स्थानीय यात्रा, भोजन व पेय पदार्थ, मनोरंजन एवं आराम शामिल होता है। बहुलक्षीय पर्यटन में यात्रा व पर्यटन के लिए बहुत से स्थानों में घूमना शामिल है। यह पर्यटकों के लिए एक बहुत लोकप्रिय क्रियाकलाप है। जब वे घूमने जाते हैं तो एक के बाद कई स्थानों पर जाते हैं न कि एक स्थान पर। इसलिए बहुलक्षीय पर्यटन आज की एक ज़रूरत है।

क्रियाकलाप 1.1

मान लीजिए आप किसी गाँव अथवा कस्बे में रहते हैं। लेकिन यदि आप अपने मूल स्थान का पता लगाएँ तो हो सकता है कि आपको पता चले कि आपके पूर्वज इस स्थान पर बाहर से आए थे। अपने परिवार/समुदाय के किसी बूढ़े सदस्यों से चर्चा करें और अपने मूल स्थान का पता लगाने की कोशिश कीजिए और यह भी पता लगाएँ कि आपके पूर्वजों के प्रव्रजन के कारण क्या थे? इस व्यक्ति से पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची बनाएँ और सभी संभव उत्तरों को खोजिए।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. मानव जीवन में विकासोन्मुखी परिवर्तनों पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।
2. खानाबदोशी क्या है?
3. व्यापार ने किस प्रकार पर्यटन में वृद्धि की शुरुआत की?

1.4 संसार के प्रारम्भिक व्यापार-मार्ग और पर्यटन

यह समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि वास्तव में आधुनिक व्यापार युग में पर्यटन में कैसे और क्यों वृद्धि हुई? यह भी जानना आवश्यक है कि कौन-सी सम्भव स्थितियों और खोजों ने पर्यटन को तीव्र गति से बढ़ावा दिया? चलिए हम उन व्यापार मार्गों से शुरू करते हैं जो विश्व इतिहास के आधुनिक काल के प्रारंभ के दौरान खोजे गए। वास्को-डी-गामा, कोलंबस एवं मागेलन जैसे अन्वेषकों ने भारत, अमेरिका एवं पृथ्वी के अन्य स्थानों के इन मार्गों की खोज में बहुत बड़ा योगदान दिया।

व्यापार मार्ग उन रास्तों को कहा जाता है जिन्हें वस्तुओं के वाणिज्यिक स्थानान्तरण के लिए प्रयोग किया जाता था। ये वस्तुओं को लंबी दूरी तक ले जाने में सहायक होते थे। मुख्य मार्ग को परिवहन की धमनी माना जाता था और इससे विस्तृत इलाकों को जोड़ने हेतु सहायक और अंत:संबद्ध रास्तों का निर्माण किया जाता था। यह सामान्य सिद्धान्त बहुत पहले से लागू था। उस समय सिल्क रूट (रेशम मार्ग) और स्पाइस रूट (मसाला मार्ग) थे।

एफ्रो-यूरेशियन क्षेत्र में फैले व्यापार मार्गों को आपस में जोड़ने में सिल्क रूट एक ऐतिहासिक तंत्र सिद्ध हुआ। यह पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी एशिया को भूमध्य सागर व यूरोपीय देशों से जोड़ता है। यह सिल्क मार्ग सीरिया, टर्की, ईरान, तुर्कमेनिस्तान उजबेकिस्तान, पाकिस्तान और चीन से गुजरता है। यह लगभग 4500 किमी. लंबा है। इसका नामकरण चीनी सिल्क के लाभकारी व्यापार के नाम पर हुआ जो पूरे मार्ग पर किया जाता था। सिल्क रूट पर व्यापार चीन और भारतीय उपमहाद्वीप, फ़ारस और अरब की सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण घटक था।

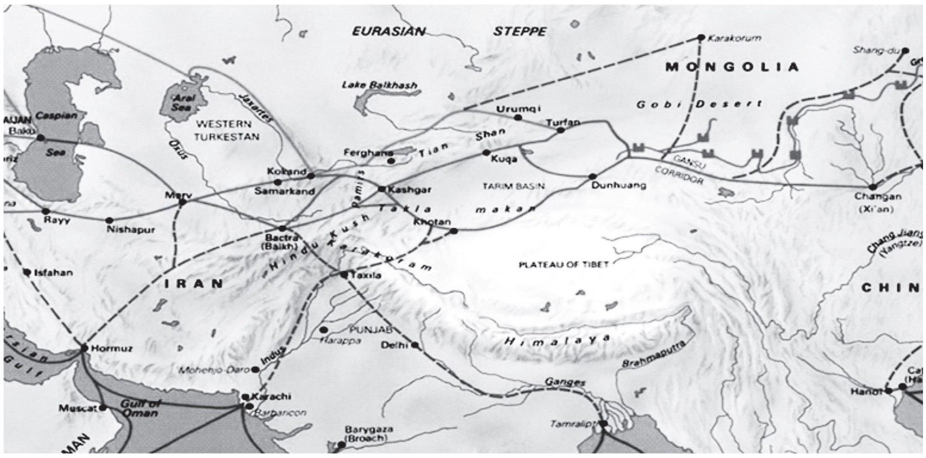

चित्र 1.1: सिल्क एवं मसाला मार्ग

मसालों का व्यापार एशिया, उत्तर-पूर्वी अफ्रीका एवं यूरोप में ऐतिहासिक सभ्यता के मध्य व्यापार को दर्शाता है। दालचीनी, तेजपत्ता, इलाइची, अदरक एवं हल्दी जैसे मसालों को पूर्वी संसार में वाणिज्य के रूप में प्रयोग किया जाता था। ईसा युग के प्रारंभ से पहले इन मसालों ने मध्य पूर्व में प्रवेश किया। पहली सहस्राब्दि के मध्य में भारत एवं श्रीलंका की ओर आने वाले समुद्री मार्गों पर भारतीयों व इथोपियन का नियंत्रण था, लेकिन मध्यकाल में मुस्लिम व्यापारियों का मसालों के समुद्रीय व्यापार पर पूरे हिन्द महासागर पर वर्चस्व रहा। यह व्यापार यूरोपीय खोजों के युग में परिवर्तित हो गया, विशेषकर काली मिर्च का व्यापार यूरोपियन व्यापारियों के लिए एक प्रभावशाली कार्यकलाप हो गया (चित्र 1.1)।

1.4.1 समुद्री यात्रा एवं संसार की खोज

यूरोप से 'केप ऑफ गुड होप' के रास्ते हिन्द महासागर के मार्ग को वर्ष 1498 में पुर्तगाल का अन्वेषी नाविक वास्को-डी-गामा ने तैयार किया था जो व्यापार का एक नया समुद्री मार्ग बन गया। प्रसिद्ध खोजी क्रिस्टोफर कोलंबस भारत की खोज में निकला था परन्तु अक्तूबर 1492 में

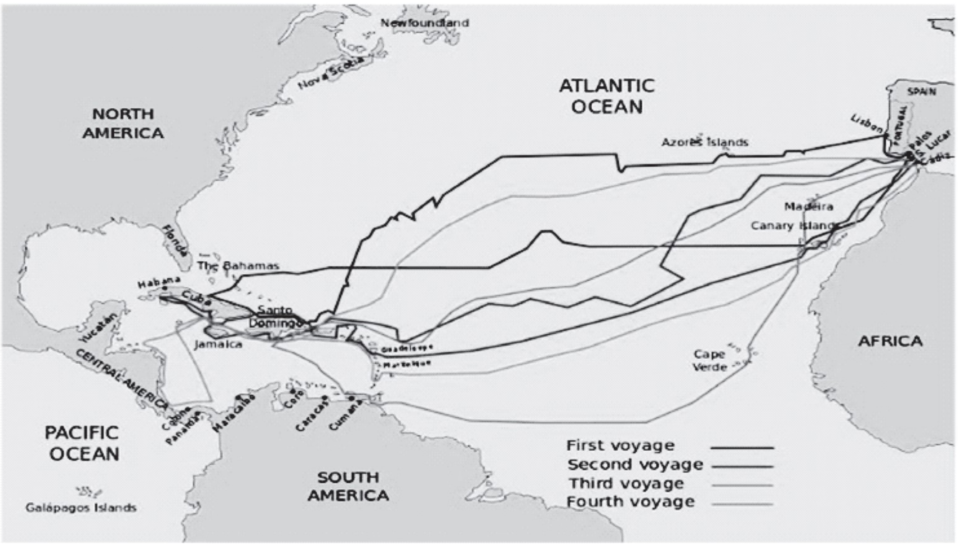

चित्र 1.2: कोलम्बस द्वारा अपनाए गए मार्ग

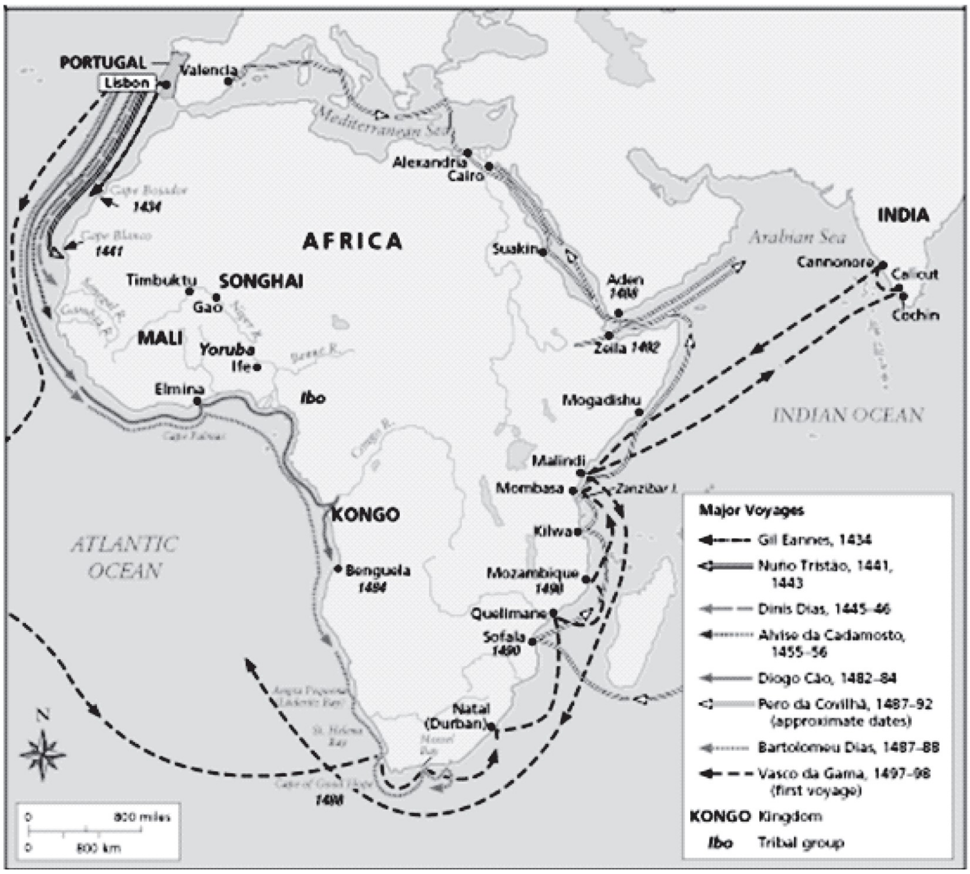

चित्र 1.3: वास्को-डी-गामा द्वारा अपनाए गए मार्ग

भारत के बजाय 'बाहमास सान साल्वेडोर' पहुँच गया। अगली चार समुद्री यात्राओं में कोलंबस ने क्यूबा, जमाइका, हिस्पेनिओला और प्यूरोटो रिको की खोज की। प्रमुख खोजकर्ताओं द्वारा इन मार्गों की खोज ने दुनिया के बारे में बढ़ती जागरूकता में सहायता की। वे मूलत: साहसी थे, उन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में यात्राएँ की। संभवतया नए स्थानों की खोज ने आधुनिक पर्यटन को जन्म दिया (चित्र 1.2 और 1.3 देखें)।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. रेशम और मसाला मार्गों ने पर्यटन को कैसे बढ़ावा दिया?
2. भारत में वास्को-डी-गामा कब और कहाँ आया?

1.5 अतीत में शैक्षिक पर्यटन

प्राचीन काल में **नालंदा** शिक्षा के लिए एक प्रसिद्ध स्थान था। दुनिया के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय के खंडहर बोधगया शहर से 62 किमी. की दूरी पर और वर्तमान बिहार में पटना से 90 किमी. दक्षिण में स्थित है। 7वीं शताब्दी में चीन के ह्यूनसांग बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आए थे और नालन्दा में रुके थे। उन्होनें नालंदा में उत्कृष्ट शैक्षणिक व्यवस्था और मठ की जिंदगी की शुद्धता के बारे में विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने प्राचीन समय के इस अनूठे विश्वविद्यालय के माहौल और वास्तुकला दोनों का, दुनिया के पहले आवासीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में विधिवत वर्णन किया।

तक्षशिला, रावलपिंडी के उत्तर-पश्चिम में 30 किलोमीटर दूर ग्रांड ट्रंक रोड पर स्थित है। यह एशिया में सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में से एक है। सिल्क रोड की शाखा पर रणनीतिक रूप से स्थित यह शहर पश्चिम की ओर चीन से जुड़ता है और यह आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों रूपों से विकसित था। तक्षशिला पहली और 5वीं शताब्दी ई. के बीच अपने शीर्ष पर था। बौद्ध स्मारकों को पूरी तक्षशिला घाटी में खड़ा किया गया था जो एक धार्मिक गढ़ के रूप में परिवर्तित हो गया था और मध्य एशिया तथा चीन के तीर्थयात्रियों के लिए तीर्थस्थल था। इस शहर का बड़ा आकर्षण महान स्तूप है जो पाकिस्तान भर में सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली है जो भीर माउंड के पूर्व में 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। तक्षशिला दुनिया में सबसे पहला शिक्षा-केन्द्र माना जाता था।

विक्रमशिला, पाल वंश के दौरान भारत में बौद्ध ज्ञान के दो अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक था। विक्रमशिला को राजा धर्मपाल (783 ई. पू. से 820 ई. पू.) ने नालंदा में विद्वता की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए स्थापित किया था। पाल काल में प्राचीन बंगाल एवं मगध में अनेक मठ बने हैं। विक्रमशिला सबसे बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय था जिसमें सौ से अधिक अध्यापक और एक हज़ार से अधिक छात्र पढ़ते थे। इस विश्वविद्यालय से अनेक विद्वान निकले जिन्हें बौद्ध ज्ञान, संस्कृति और धर्म के प्रचार हेतु प्राय: विदेशों में आमंत्रित किया जाता था। इनमें से सबसे अधिक

टिप्पणियाँ

विख्यात और प्रकांड अतिशा दिपंकर थे, जिन्होंने तिब्बत बौद्ध की सभा-पद्धति की स्थापना की थी। यहाँ दर्शन, व्याकरण, तत्वमीमांसा और भारतीय तर्कशास्त्र जैसे विषय पढ़ाए जाते थे लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विषय तंत्रवाद पढ़ाया जाता था।

देवबंद, देश के प्राचीन शहरों में से एक है। दारूल उलूम देवबंद भारत में इस्लाम का एक स्कूल है जहाँ से देवबंदी इस्लाम आन्दोलन आरम्भ हुआ था। यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के एक शहर देवबन्द में स्थित है। इसे इस्लाम के प्रख्यात विद्वान मौलाना मोहम्मद कासिम ननोत्वी द्वारा वर्ष 1866 में स्थापित किया गया था। इस संस्थान को भारत के साथ-साथ भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त है। विदेशों से भी बहुत से विद्वान देवबंद में कुरान के साथ-साथ हदीस का अध्ययन करने आते थे। देवबंद में दारूल उलूम के अलावा अनेक शैक्षिक संस्थान जैसे दारूल उलूम वक्फ़, मदरसा असगरिया, जामिया इमाम अनवर, जामिया तिब्बिया यूनानी भेषज महाविद्यालय, इंटर कॉलेज, तहसील स्कूल, इस्लामिया उच्चतर माध्यमिक स्कूल, संस्कृत महाविद्यालय, पब्लिक स्कूल इत्यादि स्थित हैं।

1.6 धार्मिक एवं तीर्थ-यात्री पर्यटन

इसे सामान्यतया विश्वास पर्यटन से जाना जाता है। धार्मिक पर्यटन पुरातन काल से ही अस्तित्व में रहा है और इसको धार्मिक स्थलों की यात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसे प्राय: धार्मिक यात्रा के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार के पर्यटन में लोग अकेले अथवा समूह में तीर्थ-यात्रा, मिशनरी अथवा विश्राम के लिए यात्रा करते थे। संसार की सबसे बड़ी धार्मिक यात्रा सऊदी अरब में मक्का में हज यात्रा के रूप में होती है। भारत में इलाहाबाद में कुंभ मेला होता है जिसमें तीन नदियों गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम में डुबकी लगाने के लिए श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ रहती है। आधुनिक धार्मिक पर्यटक संसार भर में पवित्र शहरों एवं पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं। कुछ प्रसिद्ध पवित्र धार्मिक शहर जेरूसलेम, मक्का, वाराणसी, पुष्कर, इलाहाबाद, अजमेर और अमृतसर हैं।

धार्मिक पर्यटन के दो अलग पहलू हैं (क) घरेलू पर्यटक जिनका अपने धार्मिक विश्वास के अनुसार अपने देवता/स्थान के साथ आत्मिक लगाव है। (ख) विदेशी पर्यटक जो अलग-अलग धर्म, क्षेत्र व देश के हैं जिनके लिए धार्मिक स्थान एवं धार्मिक कार्य एक अनूठेपन की बात होती हैं। अनेक मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरूद्वारे स्थल और अन्य प्रमुख धार्मिक केन्द्र धार्मिक व तीर्थ यात्रा के पर्यटन के स्थल हैं।

तीर्थ यात्रा व्यक्तियों के किसी समूह द्वारा की जा सकती है, वे अपने संबंधित विश्वास के प्रति निष्ठावान होते हैं। उनका विश्वास होता है कि वे तीर्थ यात्रा करने से और पवित्र हो जाएँगे और सही मार्ग पर चल सकेंगे। इसीलिए तीर्थ-यात्रा के पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है। हिंदू, इसाई, इस्लाम, सिक्ख, जैन व बौद्ध स्थल तीर्थ यात्रा एवं पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल एवं आकर्षण के केंद्र हैं। वे हमारे अध्ययन के अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र में आते हैं।

क्रियाकलाप 1.2

एटलस की सहायता से आप कुछ पर्यटक स्थलों की पहचान कीजिए। इन स्थलों की महाद्वीप/देशों के अनुसार सूची तैयार कीजिए और इन स्थलों के बारे में संक्षिप्त ब्यौरा लिखिए।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. देवबंद पर एक नोट लिखिए।
2. धार्मिक व तीर्थ-यात्रा पर्यटन क्या है?

आपने क्या सीखा

- समय के साथ पर्यटन बदलता रहा है। सभ्यता के प्रारंभ में यात्राएँ केवल पैदल जा सकने वाली दूरी तक सीमित थीं।
- कृषि उत्पादों के अधिक उत्पादन एवं मसालों और सिल्क के व्यापार ने इन व्यापार केंद्रों में पर्यटन को प्रोत्साहित किया।
- व्यापार के कारण लोगों का लंबी दूरी तक जाना हुआ। पर्यटन को धर्म से बहुत अधिक बढ़ावा मिला।
- प्रारंभ से ही धार्मिक व तीर्थ-यात्रा पर्यटन बहुत लोकप्रिय रहा है और समूह पर्यटन का एक कारण माना जाता रहा है।
- अतीत में शैक्षिक संस्थानों की प्रगति से पर्यटक कार्यकलापों में वृद्धि हुई क्योंकि चीन के विद्वानों ने नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया और यहीं अध्ययन भी किया।

पाठांत प्रश्न

1. मानव जीवन-शैली में विकासोन्मुखी परिवर्तनों के बारे में लिखिए।
2. प्रारंभिक मानव प्रव्रजन का विवरण लिखिए।
3. प्रारंभिक काल में पर्यटन की व्याख्या कीजिए।
4. औपनिवेशिक एवं आधुनिक काल में पर्यटन पर चर्चा कीजिए।
5. सिल्क एवं मसाले मार्ग क्या हैं? पर्यटन को बढ़ावा देने में उनकी महत्ता की व्याख्या कीजिए।

टिप्पणियाँ

6. शिक्षा की महत्ता एवं पर्यटन में उसके सहयोग के बारे में लिखिए
7. समुद्री यात्रा संसार को जानने में कैसे सहायक हुई और इसका पर्यटन में क्या योगदान रहा।
8. ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में पर्यटन एवं उसकी स्थिति पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों का उत्तर

1.1

1. शैक्षिक संस्थानों ने अनेक शिष्यों को ज्ञान अर्जित करने हेतु आकर्षित किया। वे भिन्न-भिन्न स्थानों से आए। उन्होंने एक दूसरे से संवाद किया और अनेक क्षेत्रों के बारे में जाना। इसने अन्य भागों की यात्रा करने की इच्छा को जगाया।
2. बहुत से साहसी व्यक्तियों द्वारा संसार के अनेक इलाकों/देशों की समुद्री यात्रा ने अनेक भागों की जानकारी प्रदान की। इससे उन क्षेत्रों के मध्य व्यापार स्थापित हुआ। इससे उपनिवेशवाद बढ़ा और अधिक लाभ लेने में रूचि बढ़ी। इन सब कारणों से पर्यटन का भी विकास हुआ।
3. हाल ही के वर्षो में पर्यटन के विकास के लिए और भी बहुत से कारण हैं। परिवहन सुविधाएँ, होटल, भोजन व पेय, लोगों की आय वृद्धि, विश्राम की छुट्टियाँ, सरकार द्वारा रियायती छुट्टी यात्रा देना उनमें महत्वपूर्ण कारण हैं। यात्रा संचालकों द्वारा छूट देना तथा सरकार द्वारा रियायती अवकाश यात्रा पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण हैं।

1.2

1. मानव प्राणी अतीत में अनेक विकासोन्मुखी परिवर्तनों से गुजरा है जो पूर्णत: खानाबदोश जीवन से शुरू होकर वर्तमान आधुनिक जीवन-शैली तक पहुँचा है।
2. खानाबदोश व्यक्ति अपने पालतू पशुओं के साथ भोजन व हरे मैदानों की खोज में घूमने वाले लोग थे। कुत्ते और घोड़े महत्वपूर्ण पालतू पशु होते थे। वे उनके लिए शिकार पकड़ने में सहायक होते थे। खानाबदोश स्थायी तौर पर आवास नहीं बनाते थे। मुख्यत: वे तीन प्रकार के होते थे – शिकारी, पशुचारी खानाबदोश और भ्रमणशील खानाबदोश।
3. व्यापार से व्यक्तियों के मध्य संवाद स्थापित हुआ और विस्तृत इलाके की विस्तृत जानकारी मिली जिसके बाद पर्यटन क्रियाकलापों में वृद्धि हुई

1.3

1. सिल्क व मसाला व्यापार में वृद्धि होने के कारण पारस्परिक संवाद बढ़ा। वे बार-बार यात्रा करते थे जो बाद में पर्यटन में परिवर्तित हो गया।
2. वर्ष 1498 में कालीकट।

1.4

1. **देवबंद** देश के प्राचीन शहरों में से एक है। दारूल उलूम देवबंद भारत में एक इस्लामिक स्कूल है जहाँ से देवबंदी इस्लामी आन्दोलन प्रारंभ हुआ था। यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में देवबंद में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1866 में मौलाना मोहम्मद कासिम नन्नोत्वी के नेतृत्व में प्रमुख इस्लामी विद्वानों (उलेमा) द्वारा की गई।

2. धार्मिक पर्यटन को विभिन्न धार्मिक उद्देश्यों से की गई यात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें किसी समय की कला, संस्कृति, प्रथाओं और वास्तुकला के अनुभव को शामिल किया जाता है। धार्मिक पर्यटन को प्राय: विश्वास पर्यटन कहा जाता है। तीर्थ यात्रियों में विश्वास और आस्था का स्तर अधिक होता है। तीर्थ यात्रा किसी भी समूह द्वारा की जा सकती है पर सच तो यह है कि लोग इस यात्रा को बढ़ती उम्र में करते हैं। वे अपनी धार्मिक आस्था के पक्के समर्थक होते हैं।